SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

व्यंग्य शिल्पी लतीफ घोंघी

राजेश शर्मा, पी–एचडी.
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश शर्मा, पी–एचडी.
E-mail : rjournalist1602@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/02/2026
Revised on : 19/04/2026
Accepted on : 28/04/2026
Overall Similarity : 00% on 20/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 20, 2026 (07:12 AM)
Matches: 0 / 4317 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code

शोध सार

मनुष्यों में जीवन यापन के सभी के अपने विविध व्यवसाय या रोजगार के साधन होते हैं। इसी के साथ ही कुछ लोगों में विशेष रुचियां भी होती हैं। किसी को संगीत, गायन, वादन, लेखन, खेल, मूर्तिकला, पठन–पाठन आदि में रुचि होती है। इसी तरह पेशे से वकील लतीफ घोंघी को व्यंग्य लेखन में विशेष रुचि थी। उनका इस विधा में महारथ के कारण उन्हें "व्यंग्य शिल्पी" की संज्ञा दी गई थी। उन दिनों उनकी पारिवारिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी जिसके कारण वे उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज नहीं जा सके। आगे पढ़ने की प्रबल इच्छा के कारण स्वाध्यायी छात्र के रूप में उन्होंने आगे की पढ़ाई जारी रखी। प्रायमरी स्कूल की नौकरी करते हुए उनके आगे पढ़ने के रास्ते खुलते गए। एक समय भोजन करके और मित्रों के पुराने कपड़े पहनकर भी वे अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटे। डॉक्टर बनने की उनकी दिली इच्छा पूरी नहीं हो पाई। अभाव और संघर्ष में दिन काटने के कारण उनके मन में शोषितों और पीड़ितों के लिए हमेशा सहानुभूति रही। 1961 से शुरू हुई उनकी हास्य–व्यंग्य लेखन की यात्रा आजीवन चलती रही। वे अपनी रचनाएं सीधे टाइपराइटर पर लिखते रहे। उनकी रचनाओं का मूल लक्ष्य अव्यवस्था, अनास्था, अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी, अन्याय आदि व्यवस्था विरोधी विसंगतियों पर प्रहार करना है जिसे उन्होंने हास्य के साथ कैप्सूल बनाकर रोचक रूप में प्रस्तुत किया है। वे कहते थे कि व्यंग्य एक प्रकार का शीशा है, जिसमें देखने वाले को अपने मुंह को छोड़कर प्रत्येक का मुंह दिखाई देता है। यही कारण है कि विश्व में व्यंग्य का स्वागत किय जाता है। व्यंग्यकार एक ऐसा सामाजिक व्यक्ति होता है, जिसका कार्य समक्ष पड़ी गंदगी को साफ करना होता है। वैसे तो व्यंग्य आक्रामक होता है, जो पाठक के मन पर चोट करता है। यह चोट व्यवस्था की, समाज की विद्रूपताओं और विसंगतियों की हो सकती है, आदमी के

दोहरे व्यक्तित्व की हो सकती है या और किसी तरह की। बहरहाल आक्रामकता ही व्यंग्य की पहचान मानी गई है। वे फेंटेसी के माध्यम से व्यंग्य उभारने में प्रयत्नशील रहे। उनकी रचनाएं एक प्रसंग के पूर्ण प्रभाव के रूप में व्यंग्य करती हैं। एक संपूर्ण प्रसंग किसी चरित्र, वर्ग विशेष, घटना, समस्या विशेष की विसंगतियों को उभारता है और ये विसंगतियां ही व्यंग्य को जन्म देती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में कथातत्व प्रमुखता से विद्यमान है।

मुख्य शब्द

महारथ, शिल्पी, सहानुभूति, टाइपराइटर, विसंगतियों, विद्रूपताओं.

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध–पत्र में व्यंग्यकार लतीफ घोंघी का व्यंग्य विधा में योगदान बताने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं का मूल लक्ष्य अव्यवस्था, अनास्था, अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी, अन्याय रहा है। समाज में व्याप्त विसंगतियां ही उनके अध्ययन का मूल विषय हैं।

शोध प्रविधि

प्राथमिक व द्वितीयक शोध सामग्री के साथ सर्वेक्षणात्मक शोध के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसके साथ–साथ विद्वानों का भी मार्गदर्शन लिया गया है।

उद्देश्य

लतीफ घोंघी की व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों को उजागर किया गया है साथ ही उनके योगदान को सामने लाने का प्रयास है।

लतीफ घोंघी

पिताः उस्मान दादा।

जन्म स्थानः महासमुंद (छत्तीसगढ़)।

जन्मतिथिः 28 सितम्बर 1935।

अवसानः 24 मई 2005।

लतीफ घोंघी के पिता उस्मान दादा मूलतः कच्छ (गुजरात) के निवासी थे तथा सन् 1926 में वे छत्तीसढ़ अंचल में आ गये थे। उसी समय से ही जीवनपर्यंत छत्तीसगढ़ में महासमुंद के ही होकर रह गये। लतीफ अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। सन् 1953 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन दिनों उनकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण वे उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज नहीं जा सके। लतीफ घोंघी को बचपन से ही पढ़ाई में रुचि रही। स्वाध्यायी छात्र के रूप में उन्होंने बीए की परीक्षा पास की और बाद में रायपुर के दुर्गा लॉ कॉलेज से उन्होंने एल. एल.बी की परीक्षा पास की और वकालत करने लगे।

मैट्रिक पास करने के बाद वे एक माह तक जज मजिस्ट्रेट महासमुंद में लिपिक के पद पर नौकरी में लगे लेकिन उन्हें नौकरी रास नहीं आई। पिता ठेकेदारी करते थे इसलिए वे चाहते थे कि लतीफ भी ठेकेदारी करे। एक वर्ष बीड़ी पत्तों की खरीदी की, ईंट भट्ठा चलाया, किराने की दुकान लगाई और साथ–साथ अजमेर बोर्ड से प्रायवेट इंटरमीडियेट (बारहवीं) की परीक्षा पास की। इस बीच कुछ दिनों तक ड्राईंग में रुचि होने के कारण साईन बोर्ड पेंटिंग का भी काम किया।.

सन् 1955 में इंटर पास होने के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए उन्होंने जनपद स्कूल तुमगॉव में प्रायमरी स्कूल शिक्षक के पद पर 49 रु (उन्चास रुपए) माह पर अर्ध शासकीय नौकरी की। उन दिनों शिक्षक की हैसियत से ही परीक्षा में प्राइवेट बैठने की अनुमति मिलती थी इसलिए उन्होंने अपना जीवन इस छोटी सी नौकरी से प्रारंभ किया। सन् 1958 में बीए की परीक्षा सागर विश्वविद्यालय से पास की। परिवार पर आर्थिक संकट अभी बना हुआ

था लेकिन उनकी इच्छा थी कि किसी तरह वकालत पास कर लें। उन दिनों रायपुर में लॉ कॉलेज में दाखिला लिया। इस बीच वे फोटोग्राफी भी करते थे। हफ्ते में दो दिन के लिए वे महासमुंद आते और ''स्टार लाईट फोटो सर्विस'' के नाम से अपना स्टूडियो चलाते थे। इससे जो भी आय होती थी, उससे वे अपनी पढ़ाई का खर्च निकालते थे। एक बार महासमुंद प्रवास के दौरान 2003 में उन्होंने बताया था कि वे दिन उनके जीवन में संघर्ष के दिन थे। 33 रुपए महीने के लॉज में सिर्फ एक समय भोजन करते थे और 20 रुपए देते थे। अपने दोस्तों के पुराने कपड़े ऑल्टर करवाकर पहनते थे। फाकेमस्ती में उनका जीवन बीता। उनके मन में एक लगन थी कि पढ़कर कुछ बनना है। इस बीच उन्होंने भिलाई स्टील प्रोजेक्ट में भी कुछ दिनों तक नौकरी की साथ ही डी.एच.बी (डिप्लोमा इन होम्योपैथी और बायोकेमेस्ट्री) का दो वर्श का पाठ्यक्रम भी रायपुर में पूरा किया। उनकी दिली इच्छा डॉक्टर बनने की थी, लेकिन आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे मेडिकल की पढ़ाई नहीं कर सके इसलिए विवश होकर उन्हें वकालत के क्षेत्र में आना पड़ा। सन् 1961 में वकालत पास करने के बाद उन्होंने महासमुंद में ही वकालत प्रारंभ की और एक संवेदनशील और सफल वकील के रूप में नगर में ख्याति अर्जित की।

लतीफ घोंघी बहुत ही मिलनसार प्रवृत्ति के थे। उन्होंने दुःख के दिन देखे थे तथा संघर्ष कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण किया था। यही कारण था कि समाज के शोषित और पीड़ित वर्ग के लिए उनके मन में हमेशा सहानुभूति रही। अहंकार उन्हें छू भी नहीं पाया। उनका स्वभाव बहुत ही विनम्र था। वकालत के साथ–साथ उन्होंने सन् 1961 में हास्य–व्यंग्य लिखना प्रारंभ किया। हास्य–व्यंगय की प्रेरणा के बारे में उन्होंने बताया था कि:

उन दिनों में मैं अपने मित्र रायपुर निवासी एडव्होकेट कृष्ण मुरारी अग्रवाल के यहां अपनी कठिनाइयों को हल करने जाया करता था। एक दिन अग्रवाल साहब ने अपनी ''विशाल भारत'' में छपी कुछ कहानियॉ मुझे दिखाईं, तो मेरे मन में भी आया कि मैं भी कहानी लिखूं बस उसी दिन से लिखना शुरू हो गया।

लतीफ घोंघी की पहली व्यंग्य रचना ''गड़गड़ाहट'' दिसम्बर 1962 में आगरा से प्रकाशित होने वाली हास्य–व्यंग्य की पत्रिका ''नोंक–झोंक'' में छपी थी। उन्होंने 1960 में कविताएं लिखना प्रारंभ किया था लेकिन पहली व्यंग्य रचना छपते ही उनका लेखन सिर्फ गद्य व्यंग्य लेखन में स्थिर हो गया। प्रारंभिक वर्षों में उनकी हास्य–व्यंग्य रचनाएं रंग मासिक मुंबई, मसखरा मासिक कानपुर, नोंक–झोंक मासिक आगरा, बेढ़ब मासिक बनारस, सैलानी हास्य–व्यंग्य पाक्षिक दिल्ली आदि पत्रिकाओं में छपीं। वे मानते थे कि इन पत्रिकाओं ने ही उन्हें स्थायी प्रेरणा दी और उनका लेखन नियमित चलने लगा।

बाद में सन् 1968 में उनकी पहली रचना साप्ताहिक हिन्दुस्तान में छपी और फिर वहां से धर्मयुग, सारिका, कादम्बिनी, मुक्ता, नई कहानियां, माधुरी आदि सभी अखिल भारतीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में तथा गुरुमुखी, मराठी, गुजराती, तेलुगु, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं में भी उनकी रचनाएं छपती रहीं।

श्री घोंघी का पहला व्यंगय संग्रह ''उड़ते उल्लू के पंख'' सन् 1968 में हस्ताक्षर प्रकाशन रायपुर से प्रकाशित हुआ। उनके 15 व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने कई अखबारों में हास्य–व्यंग्य के नियमित कॉलम लिखे तथा उन्होंने खुद को हास्य–व्यंग्य के लिए समर्पित भी किया। उन्होंने अपनी अंतिम सांसों तक वकालत की और सृजनात्मक साहित्य को भी पूरा समय दिया। उनके लेखन की एक विशेषता यह भी रही कि वे अपनी रचनाएं सीधे टाइपराइटर पर लिखते रहे। वे मानते थे कि ऐसा लिखने में उन्हें अधिक सुविधा होती है कि उनके सोचने की रफ्तार टाईपराइटर के साथ अधिक अच्छे तालमेल से बैठती है तथा अभिव्यक्ति में दुहराव कम होता है।

लतीफ घोंघी की रचनाओं में अनेक स्वर मुखरित होते हैं जो प्रसंग और परिस्थिति के अनुसार कहीं हास्य का सुखद अनुभव कराते हैं, तो कहीं व्यंग्य का। कहीं व्यंग्योन्मुख हास्य का तो कहीं हास्योन्मुख व्यंग्य का। इन चार स्तरों से उनकी रचनाओं को देखा जा सकता है, जिन्हें समग्रता की दृष्टि से (तथा सुविधा की दृष्टि से), हास्य–व्यंग्य कहना समीचीन प्रतीत होता है।

''हास्य को लतीफ घोंघी ने सुविधा के लिए दो भागों में बॉटा है। एक ऐसा हास्य जो संपूर्ण रचना में एक

परिस्थिति को जन्म देकर किया जाता है। रचना और उनके पात्रों के साथ जब एक पूरा परिदृश्य निर्मित हो जाता है, तब पात्र के हर वाक्य जो भले ही अर्थहीन लगें पाठक को हास्य के लिए बाध्य कर देता है और दूसरी रचना ऐसी होती है, जिसमें बिना किसी अर्थ का निर्माण किए वह ऐसे अंशों का निर्माण कर देती है, जिसका अर्थ निकालकर पाठक स्वयं हंसने के लिए मजबूर हो जाता है।''[1]

लतीफ घोंघी ने अपनी रचनाओं में संदर्भानुसार स्वस्थ हास्य की सृष्टि की है, परन्तु कहीं–कहीं यह हास्य फूहड़ सा हो गया हैः

''वे बीच में उठकर बाहर चले गये। मैंने पूछा तो बोले–प्रकृति मुझे आमंत्रित कर रही है, मैं पांच मिनट में आता हूँ.....तब तक तुम सोचते रहो।''[2]

''तहसीलदार का चपरासी बधु के पिता को समझाता है कि साहब को कुछ दे दो ......साहब अच्छे हैं.......तुम्हारी लड़की को जल्दी निपटा देंगे....... ।''[3]

''बचऊ उदास हो गए। बोले अजीब कानून बना दिया भाई सरकार ने। अरे बच्चे पैदा करने के लिए ताकत हम लगा रहे हैं, तो सरकार को क्या तकलीफ हो रही है।''[4]

स्वस्थ हास्य की सृष्टि करना उतना ही कठिन है जितना सरल फूहड़ हास्य की सृष्टि करना है। लतीफ घोंघी की रचनाओं में स्थान–स्थान पर व्यंग्य के साथ सुखद स्वस्थ हास्य का पुट मिलता हैः

''शास्त्रीय संगीत की प्रेरणा का दूसरा श्रेय मेरी पत्नी जी को है। पहले तो मैं उनकी बात को कतई सीरियसली नहीं लेता था लेकिन एक रात जब उसके लयबद्ध खर्राटों से मेरी नींद खुली तो मुझे लगा कि मैं किसी संगीत समारोह में बैठा हूँ। वह एक गहरी सांस लेती और अपना मुंह कबरीनुमा स्टाइल में खोलकर मीड़ देती हुई खर्राटा लेती तो लगता जैसे कोई मंजी हुई गायिका मियां की तोड़ी सुनाने के लिए विस्तार की भूमिका बना रही हैं।''[5]

व्यंग्यात्मक हास्य का पुट वहां होता है, जहां लेखक व्यंग्य करते–करते हास्य पर उतर जाता हैः

राजनीति में जो पदों की भीख मांगी जाती है, वह केवल संकेतों के माध्यम से मांगी जाती है। यह नहीं कि लिया कटोरा हाथ में और विधानसभा या संसद भवन के सामने खड़े होकर मांगने लगेः

''मिले माई–बाप.....सचिव, मंत्री, अध्यक्ष, उप–सुप का
कोई पद......है कोई देने वाला इस गरीब को।''[6]

श्री घोंघी की रचनाओं का मूल लक्ष्य अव्यवस्था, अनास्था, अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी, अन्याय आदि व्यवस्था विरोधी मूल्यहीनताओं पर प्रहार करना है, जिसे उन्होंने हास्य के साथ कैप्सूल बनाकर रोचक रूप में प्रस्तुत किया है। कहीं–कहीं उनका व्यंग्यकार निभन्ति व्यंग्य की सृष्टि करने से नहीं चूकताः

''छात्रों के माथे से कलंक का टीका मिटाने में इस वर्ष व्याख्याताओं ने भी अच्छा योगदान दिया। उन्हें भी छात्र जगत की चिंता है। बेचारे किसी भी छात्र को बता देते थे कि उन्होंने कौन सा पेपर सेट किया है और कौन से सवाल पूछे हैं, ठीक है, छिपाने से क्या फायदा। छात्र सीधा सवाल करता है– मास्साब आप नहीं बतायेंगे तो हम उस प्रेस से पेपर ले आयेंगे जहां विश्वविद्यालय ने छपने दिया है। अब ये तो हमारी भलमनसाहत है कि हम आदरपूर्वक आपसे पूछ रहे हैं। यही न होगा कि दस बीस अधिक खर्च हो जायेंगे। याद रखिये, हम तो पता लगा ही लेंगे।''[7]

व्यंग्य के बारे में लतीफ घोंघी का कहना हैः

''व्यंग्य एक प्रकार का शीशा है, जिसमें देखने वाले को अपने मुंह को छोड़कर प्रत्येक का मुंह दिखाई देता है। यही कारण है कि विश्व में व्यंग्य का स्वागत किया जाता है। व्यंग्यकार एक ऐसा सामाजिक व्यक्ति होता है, जिसका कार्य समक्ष पड़ी गंदगी को साफ करना होता है।''[8]

''व्यंग्य के बारे में उनकी अपनी रचनाओं को लेकर घोंघी जी की राय है कि वैसे तो व्यंग्य आक्रामक होता

है, जो पाठक के मन पर चोट करता है। यह चोट व्यवस्था की, समाज की विद्रूपताओं और विसंगतियों की हो सकती है, आदमी के दोहरे व्यक्तित्व की हो सकती है या और किसी तरह की। बहरहाल आक्रामकता ही व्यंग्य की पहचान मानी गई है। वे व्यंग्य में हमलावर होने से कोई प्रमाण पैदा करने में जरा कम विश्वास रखते हैं। मीठा वार करना उनकी कमजोरी है और शहजोरी भी। उनका यह विश्वास है कि उनका हर पाठक मुंह का स्वाद कड़वा किए बिना सहज ढंग से ग्रहण कर लेता है। जब व्यंग्य में सवाल केवल प्रहार करने का हो तो यह कुछ इस तरह किया जाए कि प्रहार भी हो और आपको इस प्रहार में कोई पीड़ा भी न हो।''[9]

''लतीफ घोंघी सही अर्थों में व्यंग्यकार हैं। व्यंग्य का उद्देश्य पाठक को दूसरे की कीमत पर हंसाना या गुदगुदाना नहीं बल्कि जिंदगी की तस्वीर को व्यंग्य के माध्यम से इस तरह रख देना है कि वह सिर्फ गुदगुदाती ही महसूस न हो। विचार की सामग्री भी प्राप्त हो और स्थितियों की वास्तविक रूप में पहचान हो। लतीफ घोंघी में यह बात है और उनकी सभी रचनाएं पाठकों को प्रभावित कर सकने में पूर्णतया सक्षम हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से खुद पर हंस सकने या अपना ही मजाक उड़ा पाने का साहस रखते हैं और एक व्यंग्य की यह बहुत बड़ी शक्ति है,सफलता है।''

''लतीफ घोंघी फेंटेसी के माध्यम से व्यंग्य उभारने में प्रयत्नशील रहे। उनकी अधिकांश रचनाएं इसी प्रवृत्ति की हैं। उनकी दृष्टि अति कल्पनात्मक परिवेश में घूमती हुई जीवन को यथार्थ कार्यों में उत्पन्न विसंगतियों को उजागर करती हुई, प्रसंगों के माध्यम से उस पर व्यंग्य करती है। उनकी रचनाएं एक प्रसंग के पूर्ण प्रभाव के रूप में व्यंग्य करती हैं। एक संपूर्ण प्रसंग किसी चरित्र, वर्ग विशेष, घटना, समस्या विशेश की विसंगतियों को उभारता है और यह विसंगतियां ही व्यंग्य को जन्म देती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में कथातत्व प्रमुखता से विद्यमान है। उनमें निबंध की कसावट नहीं है, अपितु कहानी का विस्तार है।''

लतीफ घोंघी की रचनाएं

लतीफ घोंघी का लेखनकाल 1960–61 में प्रारंभ होता है। उन्होंने लेखन का प्रारंभ कविताओं से किया। सन् 1960 से 1963 के बीच उन्होंने कविताएं लिखीं जो स्वान्तः सुखाय थीं। चूंकि उनके प्रारंभिक वर्षों की ये रचनाएं कहीं प्रकाशित नहीं हुईं, इसलिए प्रमाणिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं। उनसे लिए साक्षात्कार में उन्होंने स्वीकार किया कि 1960 से 1963 के बीच उन्होंने कविताएं लिखीं, जिनमें हास्य का पुट होता था तथा कहीं–कहीं सम–सामयिक संदर्भों पर भी लिखते रहे। इन पुरानी रचनाओं की पांडुलिपि उपलब्ध नहीं हैं।

उनके प्रारंभिक दौर की दो रचनाएं उपलब्ध हैं जिनमें से एक ''राष्ट्रधर्म'' में दोगली दीवार के पीछे शीर्षक से युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई। इसमें सीधे सादे प्रतीकों का प्रयोग करते हुए युद्ध की विभीषिका का चित्रण किया गया है।

एक अन्य कविता उनके इन्हीं प्रारंभिक वर्षों में लिखी गई जो ''सुषमा''में प्रकाशित हुई, जिनमें साहित्यकारों की यौन विकृति पर प्रहार किया गया है।

लतीफ घोंघी ने हास्य व्यंग्य गद्य लेखन का प्रारंभ 1963 से किया। इसके बाद जीवनपर्यंत लिखते रहे। इसी बीच उन्होंने कुछ गंभीर कविताएं भी अपने छद्म नाम ''स्वप्नेश्वर'' के नाम से लिखीं। हास्य–व्यंग्य गद्य रचनाओं और कविताओं में सोचकर एक बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है। एक ओर गद्य रचनाओं में सामाजिक विसंगति, विद्रूपता, आडंबर, मिथ्याचार पर उन्होंने तीखे प्रहार किए हैं। वहीं उनकी कविताओं में संघर्ष, बेहतर समाज की कल्पना के लिए मुखर हुआ है।

इनके लेखन काल को तीन खंडों में विभाजित किया जा सकता हैः

1. प्रारंभिक काल की रचनाएं (1963 से 1968)।
2. मध्यकाल की रचनाएं (1969 से 1977)।
3. शीर्शकाल की रचनाएं (1978 से 1990)।

प्रारंभिक काल की रचनाएं

लतीफ घोंघी की पहली हास्य रचना ''गड़गड़ाहट'' ए.एल.घोंघी के नाम से ''नोंकझोंक'' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह विशुद्ध हास्य की रचना है, जिसमें एक प्रेमी अपनी तथाकथित प्रेमिका का पीछा इस उद्देश्य से करता है कि मौका मिलने पर उससे बात करेगा, लेकिन पूरी बस यात्रा में प्रेमी को बात करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है।

इस रचना में जहां एक ओर स्थिति का निर्माण करके हास्य पैदा किया गया है, वहीं शब्दों के माध्यम से ही हास्य उत्पन्न किय गया है, जैसे– ''रोमांस की इस घड़ी का इंतजार उसी तरह करते थे, जिस तरह भूख हड़ताल से उठा मजदूर बासे में बैठकर दूसरी रोटी का इंतजार करता है।''

शाम को कचहरी से छूटकर उसी प्रकार सीधे घर पहुंचे, जैसे कांजीहाऊस में दो दिन से बंद बकरा छूटते ही सीधे घर पहुंचता है।

''मेरी पत्रिका'' में प्रकाशित रचना ''भक्तों के लिए'' में उनके लेखन में हास्य के साथ–साथ व्यंग्य की शुरुआत हुई। इस रचना में भक्त और भगवान की फेंटेसी में एक कथा बुनी गई है, जिसमें भगवान भक्त के लिए कंट्रोल की दुकान से शक्कर लेने जाते हैं और व्यवस्था की पेचीदगियों के कारण राशन दुकान से शक्कर नहीं ला पाते। इस रचना में एक आम आदमी को प्रशासनिक प्रक्रिया के कारण जो असुविधा होती है, उसका चित्रण किया गया है।''[10]

''एकांत'' में प्रकाशित व्यंग्य कथा ''सदाचार की बोतल'' में लतीफ घोंघी की व्यंग्य दृष्टि सजग हुई है तथा वे लेखन के प्रारंभिक काल में हास्य के स्थान पर व्यंग्य के प्रहार कहीं–कहीं बिल्कुल सीधे और कहीं–कहीं संकेतों के माध्यम से करते हैं।

इसी तरह के संकेत ''अमिता'' में प्रकाशित व्यंग्य कथा ''नीली रोशनी और घास'' में भी प्रयोग किए गए हैं।

मध्यकाल की रचनाएँ

लतीफ घोंघी के लेखन के इस मध्यकाल में तीन व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इन संग्रहों में उनकी '' साप्ताहिक हिन्दुस्तान'', ''धर्मयुग'', ''माधुरी'', ''कादंबिनी'', ''सरिता'', ''मुक्ता'', ''गल्फ भारती'', ''अमिता'' आदि उस दौरान की पत्रिकाओं में प्रकाशित व्यंग्य रचनाओं को संकलित किया गया है।

''मृतक से क्षमायाचना सहित'' उनकी 1968 से 1974 के बीच प्रकाशित हास्य व्यंग्य कथाओं का संकलन है, जिसमें 12 व्यंग्य कथाएं संकलित हैं। मध्यकाल की इन रचनाओं में लतीफ घोंघी की व्यंग्य दृष्टि अपने आसपास के चरित्रों की स्थितियों तथा औसत व्यक्तियों की मानसिकता पर केंद्रित है। मध्यकाल की इन रचनाओं में सामाजिक परिवेश की विसंगतियां ही हास्य व्यंग्य कथाओं के मूल केन्द्र हैं। इनमें राजनीतिक परिवेश का स्पर्श बहुत कम हुआ है।

''मेरी मौत के बाद'' आर्थिक रूप से विपन्न एक शिक्षक के आत्मावलोकन की कथा है, जिसमें मृत्यु के बाद रिश्तेदारों, पड़ोसियों तथा जनाजे में शामिल अन्य व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएं हैं, जिसे लेखक ने प्रथम पुरुष शैली में परिकल्पना का सहारा लेकर वर्णित किया है:

मेरी मौत की खबर सुनकर सबसे पहले मेरे घर पहुंचने वाला आदमी मेरे स्कूल का हेटमास्टर था। मैंने उससे सौ रुपए उधार ले रखे थे। वह खूब रोया। लोगों ने कहा–आदमी हो तो ऐसा, शायद इससे अधिक सदमा तो किसी नजदीकी रिश्तेदार को भी नहीं लगा होगा।

''एक फिल्मी प्रेमकथा''तथा ''अधूरी डायरी'' भारतीय फिल्मों में फिल्मायी जाने वाली अस्वाभाविक स्थितियों पर व्यंग्य है तथा जिसमें फिल्मी प्रेम संबंधों पर व्यंग्य है। भारतीय फिल्मों की घिसी पिटी और हीरो–हीरोईन तथा विलेन के माध्यम से बुनी गई प्रेम कथाओं पर व्यंग्य किया गया है:

बस प्रेम शुरू हो गया। एक झील का किनारा होगा। मोटर बोट में प्रेमी–प्रेमिका बैठेंगे, प्रेमी, प्रेमिका से जबरन चिपकने की कोशिश करेगा, दोनों गाना गायेंगे और जरूरी बात है कि झील में तबला, सितार और दूसरे तमाम वाद्य

बजेंगे। आप पूछेंगे कि आवाज कहां से आई? तो साहब, मेरी कहानी फिल्मी कहानी है।

''इधर प्रेमिका की बर्थडे पार्टी है। एक से एक मेहमान आये हैं। आप कहेंगे कि ढोर जैसी बढ़ गई है नायिका, फिर भी बर्थडे का शौक। पार्टी होगी तो डांस भी होगा इसलिए पार्टी जरूरी है। फिर प्रेमिका के बाप को अपने होने वाले दामाद का ख्याल रखना है। पार्टी में वह आयेगा, प्रेमिका अर्धनग्न होकर बाप के सामने नाचेगी और उसके बाद बाप कहेगा–लेडीज एंड जेंटलमेन, एक और खुशखबरी आप लोगों के लिए है। इस मौके पर मैं अपनी बेटी की शादी अमेरिका रिटर्न से करता हूँ.....तालियां बजेंगी और प्रेमी उदास, प्रेमिका उदास।''[11]

शीर्शकाल की रचनाएं

हास्य व्यंग्य लेखन के शीर्शकाल में घोंघी जी ने अपनी हास्य व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य की सार्थकता को प्रतिपादित किया है। इस काल में उनकी सर्वाधिक हास्य व्यंग्य कृतियां प्रकाशित हुई हैं, जिनमें संकलित हास्य व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज की विसंगतियों, व्यवस्था और प्रशासन की विद्रूपताओं, व्यक्ति की स्वार्थपरक मनोवृत्तियों, आडंबरों, अनाचारों तथा दुराचारों को उभारने में वे सफल रहे हैं। उन्होंने अपने 21वें तथा 22वें व्यंग्य संग्रहों के विमोचन के समय स्वीकार किया है कि '' वे व्यवस्था की कमजोरियां, समाज की विसंगतियां, आडंबर, दुराचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, शोषण आदि प्रवृत्तियों को अपने लेखन का आधार बनाकर इन कुप्रवृत्तियों के प्रति जनमानस में कुरुचि पैदा करने की कोशिश करते हैं।''[12]

प्रकाशन के इस शीर्शकाल में उनकी 402 रचनाएं विभिन्न संग्रहों के माध्यम से प्रकाशित हुई हैं। इनमें मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं1978, बब्बू मियां कब्रिस्तान में 1979, किस्सा दाढ़ी का 1980, संकटलाल जिन्दाबाद 1978, जूते का दर्द 1983, सोने का अण्डा 1984, मुर्दानाम 1989, कब्रिस्तान का उद्‌घाटन 1984, बुद्धिजीवी की चप्पलें 1985, बधाइयों के देश में 1986, सड़े हुए दांत 1989, क्षमा करना हम दुखी हैं 1987, व्यंग्य की जुगलबंदी 1987, ज्ञान की दुकान 1988, बुद्धिमानों से बचिए 1988, मेरा मुख्य अतिथि हो जाना 1989, ईमानदारी की गोलियां 1990 और नीर–क्षीर 1990 आदि हैं।

लतीफ घोंघी ने अपने लेखन के शीर्शकाल में मानवीय जीवन के अनेक पहलुओं को छुआ है तथा समाज के विभिन्न वर्गों के चरित्रों पर अपनी व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य प्रहार किया है। ऐसी स्थितियां जो ऊपरी तौर पर सहज और सरल दिखाई देती हैं, उन्होंने इनमें गहराई तक झांक कर देखा है तथा इनकी, उनकी विसंगतियों को पकड़ा है। उनके शीर्षकाल का लेखन संसार वृहत है।

अर्थ की दृष्टि से यदि जब व्यंग्य शब्द के अंदर झांकें तो उसमें दो अलग–अलग पहलू साफ तौर पर दिखाई दे जाएंगे। एक ही विरूपता जिसे विषमता, विसंगति, विडंबना आदि भी कह सकते हैं और दूसरा है तिरछा प्रहार। व्यंग्य के ये दोनों पहलू नित्य साथ रहते हैं। एक के भी अभाव में व्यंग्य, व्यंग्य नहीं रह जाता है। तिरछे प्रहार का संबंध वेदगध्य पूर्ण शैली है, विरूपता का संबंध व्यापक युगीन यथार्थ से है।

इस दृष्टि से देखने पर लतीफ घोंघी के व्यंग्य बहुत कुछ खरे उतरते हैं। घोंघी ने युग की विविध व्यापक विसंगतियों को पकड़ा है। बनावटी नेताओं, मंच के भूखे कवियों, शेर की खाल ओढ़े ब्यूरोक्रेसी के बैलों, चालाकों, चरण रज चाटने वाले कुत्तों, अकेले समझदारों का भार ढोने वाले बुद्धिमानों, हाथ के बजाय जबान चलाकर देश का विभाजन कर दिखाने वाले जनसेवकों, जरा भी मिलावट न होने देते, उल–जुलूल फिल्में बनाने वाले निर्माताओं, नए किस्म के विद्रोही किस्म के प्रेमियों आदि के माध्यम से इन विसंगतियों को उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। प्रहार की दृष्टि से घोंघी जी का वेदगध्य कौशल भी दर्शनीय है। वह जहां सहज और संतुलित है, वहां उसमें घनत्व भी है। वह कहीं छाटे–छोटे प्रसंगों में से उभरता है तो कहीं शब्दों, वाक्यों में से।''[13]

''लतीफ घोंघी'' ने अपनी रचनाओं से समाज में व्याप्त विसंगतियों की अनेकरूपता को हास्य–व्यंग्य के माध्यम से उद्‌घाटित किया है। उनकी विशिष्ट शैली के अंतर्गत अन्य अनेक विशेशताओं में से उनकी सरल भाषा और लचीली भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है परंतु यह ध्यान देने की बात है कि व्यंग्य लेखन की मुख्य वैशिष्ट्य विधायक

स्थापनाएं केवल उद्देश्य से ही नहीं जुड़ी हैं, इस लक्ष्य तक पहुंचाने में समर्थ भाषा भी इतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यंग्य भाषा ''ओवरटोन'' और ''अंडरटोन'' की खूबियों और खामियों से अच्छी तरह परिचित हैं। इसी कारण व्यंग्य भाषा केवल तल्ख जुमले नहीं उगलती और महज भाषा की अभिधात्मक क्षमता को नहीं निकालती, अपितु वास्तविक तल्खी के बीच आक्रोश की प्रयोजनामुखी तलाश की सहज व्यंजना के धरातल पर पेश करती है।''

निष्कर्ष

व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों पर कहीं हास्य तो कहीं व्यंग्य का अनुभव कराते हैं। कुल मिलाकर रचनाओं का मूल उद्देश्य अव्यवस्था, अनास्था, अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी, अन्याय आदि पर तीखा प्रहार है इसके साथ ही जीवन के यथार्थ कार्यों में उत्पन्न विसंगतियों को उजागर करना है। उनकी दृष्टि अति कल्पनात्मक परिवेश में घूमती हुई जीवन के यथार्थ कार्यों में उत्पन्न विसंगतियों को उजागर करती हुई, प्रसंगों के माध्यम से उन पर व्यंग्य करती है। एक संपूर्ण प्रसंग किसी चरित्र, वर्ग विशेश, घटना, समस्या विशेश की विसंगतियों को उभारता है और ये विसंगतियां ही व्यंग्य को जन्म देती हैं. यही कारण है कि उनकी रचनाओं में कथातत्व प्रमुखता से विद्यमान है। उसमें निबंध की कसावट नहीं है, अपितु कहानी का विस्तार है। उनकी हास्य–व्यंग्य रचनाओं और कविताओं में एक बहुत बडा अंतर नजर आता है। उनकी प्रारंभिक कविताओं में हास्य–व्यंग्य के साथ समसामयिक संदर्भ भी दिखाई पडते हैं। उनके लेखन में फैंटेसी के साथ व्यंग्य प्रहार कहीं–कहीं बिल्कुल सीधे और कहीं–कहीं संकेतों के माध्यम से हुआ है।

संदर्भ सूची

1. कमलेश, कृष्ण (1987) अमृत संदेश, 8 फरवरी 1987, पृ. 5।
2. घोंघी, लतीफ (1988) *ज्ञान की दुकान,* पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 71।
3. घोंघी, लतीफ (1988) *इक्कीसवीं सदी का पाणिग्रहण अधिनियम, ज्ञान की दुकान,* पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 106।
4. घोंघी, लतीफ (1988) *इक्कीसवीं सदी का गर्भाधान नियंत्रण विधेयक, ज्ञान की दुकान,* पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 114।
5. घोंघी, लतीफ (1988) *शास्त्रीय संगीत की एक रात, ज्ञान की दुकान,* पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 94।
6. घोंघी, लतीफ (1988) *मुझे मेरे हाल पे छोड़ दो, ज्ञान की दुकान,*पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 56–57।
7. घोंघी, लतीफ (1885) *बुद्धिजीवी की चप्पलें, बोलो विश्वविद्यालय की जय,* पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौडा रास्ता, जयपुर–3, पृ. 40।
8. कमलेश, कृष्ण (1987) अमृत संदेश, 8 फरवरी 1987, पृ. 5।
9. कमलेश, कृष्ण (1987) अमृत संदेश, 8 फरवरी 1987, पृ. 5।
10. मेरी पत्रिका, आगरा, जून 1965।
11. लतीफ घोंघी, (1968–1974) *मृतक से क्षमा याचना सहित,* (1968–1974 के बीच प्रकाशित व्यंग्य), हस्ताक्षर प्रकाशन, रायपुर, पृ. 11–12।
12. दैनिक देशबंधु, रायपुर, 13 सितम्बर 1988।
13. शंकर पुणतांबेकर, (1979) संकटलाल जिंदाबाद, प्रकट, *समीक्षा,* मई 1979, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के–71, कृष्ण नगर, दिल्ली–51, पृ. 33–34।

****